INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES AND INTERDISCIPLINARY STUDIES
(Peer-reviewed, Refereed, Indexed & Open Access Journal)
DOI : 03.2021-11278686 ISSN : 2582-8568 IMPACT FACTOR : 6.865 (SJIF 2023)

अन्ध विश्वास और पाखण्डवाद का चक्रव्यूह
(The Maze of Superstition and Hypocrisy)

डॉ. राजेन्द्र सिंह

समाजशास्त्र विभाग,

लालाराम श्रीदेवी महाविद्यालय अतरौली (अलीगढ़)

DOI No. 03.2021-11278686 **DOI Link ::** https://doi-ds.org/doilink/09.2023-87732149/IRJHIS2309004

प्रस्तावना :

बहुतायत में यह देखने में आता है कि भारतीय, पुनर्जन्म और अगले जन्म के जाल में छटपटाता रहता है। अधिकांश धर्म, भगवान, देवी—देवता, कर्म—काण्ड, पाप—पुण्य, स्वर्ग—नरक, अलौकिक शक्तियाँ, परलौकिक जीवन, तरह—तरह की करिश्माई उपलब्धियां तथा पुनर्जन्म आदि जैसी विषयों पर चर्चा ज्यादा की जाती है जो प्राचीन भारतीय संस्कृति में कालान्तर में समय—समय पर प्रविष्ट की गई पौराणिक संस्कृति पर आधारित हैं।

जबकि वास्तविक जीवन में मानव पाश्चात्य संस्कृति के अनुसरण स्वरूप भौतिक सुख—सुविधाओं, भोग—विलास और उपलब्धियों पर गर्व महसूस करता है। यह दोहरी और पाखण्डपूर्ण जीवन पद्यति मानव जीवन को विरोधाभाषी बना देती है जिससे हमेशा ही दुविधा, असमंजस और अनिर्णय की स्थिति रहती है। यही कारण है कि भारतीय मानव धर्म, धार्मिक काण्ड, पाखण्ड और अन्धविश्वास के चक्रव्यहू से कभी निकल नहीं पाता। भारत की सामान्य जनसंख्या इसी चक्रव्यूह के जाल में उलझी हुई है।

भारत में जन सामान्य वर्ग की इसी मानसिकता और जीवन पद्यति की विसंगतियों का सत्ताधारी वर्ग और उनकी सरकारें नाजायज फायदा उठाने का भरसक प्रयास करती हैं क्योंकि जितना ही इस वर्ग का वर्तमान जीवन कष्टदायी, संकटग्रस्त और निराशाजनक होगा उतना ही धर्म की ओर इनकी प्रवृति बढ़ती जाती है। धर्म, ईश्वर, देवी—देवता, मन्दिर व तीर्थ यात्रा ही उनके लिए समस्या का निवारण लगता है। यही कारण है कि वर्तमान इक्कीसवीं सदी में आज सरकार कांवड यात्रा, अमरनाथ यात्रा, हज यात्रा, मानसरोवर यात्रा, वैष्णोदेवी, कामाख्या देवी यात्रा, जगन्नाथ यात्रा, पशुपति दर्शन, महाकालेश्वर, ज्योतिर्लिंग, केदारनाथ, रामेश्वरम् मन्दिर बगैरा—बगैरा न जाने कितने ही मन्दिरों और तीर्थों की यात्रा की व्यवस्था में सरकार सहयोग करती है और भगवान के सहारे आपकी जीवन नैया पार करने की चाहत में

भारतीय, अपना वर्तमान जीवन चक्रव्यूह में उलझाये हुए हैं। अच्छा होता कि सरकार इन धार्मिक कर्म काण्डों में युद्ध स्तर पर सक्रिय होने के बजाय देश के सारे बच्चों को आर्थिक, सामाजिक, सर्वसुलभ, सार्वभौमिक युक्त और वैज्ञानिक शिक्षा व्यवस्था की ओर विशेष रूप
से अग्रसित होती।

सर्वविदित है कि दुनियाँ में कोई व्यक्ति सर्वज्ञ नहीं हो सकता ज्ञान की कोई सीमा नहीं है ठीक उसके विपरीत अज्ञान की भी सीमा नहीं है। संसार के सभी मसलों, मुद्दों, जगहों अथवा विषयों की जानकारी होना सम्भव नहीं है परन्तु हमारे आपके जेहन में जब कोई प्रश्न आता है या मन में जिज्ञासा उत्पन्न होती है तो उसके बारे में जानकारी एकत्रित करते हैं, स्वयं पढ़ते हैं अथवा उस विषय के जानकार व्यक्ति से पूँछते हैं यदि जिज्ञासा किसी स्थान को लेकर है तब यात्रा करते हैं पूरी दुनियाँ में ज्ञान अर्जित करने के आमतौर पर यही तरीके हैं लेकिन भारतीय समाज में सदियों से अशिक्षा, अंधविश्वास, अंधभक्ति का इतना जोर रहा है कि वर्तमान आधुनिक दौर में भी जनसमुदाय का बहुत बड़ा वर्ग इससे प्रभावित है जिसमें विश्वविद्यालय स्तर तक के शिक्षित लोग भी शामिल हैं।

भारतीय समाज का बहुत बड़ा वर्ग चन्द पोंगा–पन्थियों द्वारा षणयन्त्र से कूटरचित धार्मिक कर्म–काण्ड के चक्रव्यहू में ऐसा उलझा हुआ है कि वह अपनी कमियों को स्वीकार नहीं करना चाहता और न उन्हें ठीक करने की कोशिश करता है बल्कि पोंगा पंथियों के धार्मिक कर्मकाण्ड के चक्रव्यूह में कूटरचित शब्दों, नियमों का अन्धभक्त होकर अनुसरण करता है। महूर्त एक ऐसा ही कूट–रचित शब्द है।

गर्भधारण होने और शिशु पैदा होने का कोई मुहर्त नहीं होता, मृत्यु का कोई महूर्त नहीं होता, जन्म और मृत्यु दोनों प्राकृतिक हैं इनके ऊपर मनुष्य का वश नहीं चल पाया है। विद्यालय में प्रवेश, परीक्षा में प्रवेश, नौकरी के लिए इटंरव्यू, नियुक्ति, वेतन पाने आदि का कोई मुहूर्त नहीं होता है इनकी पहले से तिथि निर्धारित होती है और इनके लिए कोई महूर्त ढूंढते भी नहीं हैं फिर क्या–

नामकरण, श्शादी, माकन निर्माण हेतु भूमि पूजन, गृह प्रवेश, मृत्यु भोज इत्यादि कर्मकाण्डों में महूर्त पोंगा पन्थियों द्वारा जबरन घुसाया गया है।?

मन्दिर का महन्त, चर्च का पादरी, मस्जिद का इमाम या कोई ज्योतिषाचार्य नक्षत्र का ज्ञाता जब बीमार होता है तो वह पवित्र और आरामदायक जगह छोड़कर अस्पताल क्यों जाता है? और यदि जाता है तो वह महूर्त देखकर क्यों नहीं जाता? यह सब हमारे बीमार दिमाग की सोच है जो किसी पाँचवी फेल को ग्रह नक्षत्रों का ज्ञाता मान लेते हैं। डॉक्टर, इंजीनियर आदि बड़े से बड़ा अधिकारी पाँचवी फेल एक व्यक्ति का गुलाम हो सकता है तो फिर आम आदमी की सोच विकृत होना स्वाभाविक है जो विज्ञान पर अविश्वास कर बुरी और छोटी सोच की ओर संकेत करती है।

सभी दिन, तिथि, वार, दिशा खगोल और प्रकृति निमित्त है कोई बुरा नहीं कोई अच्छा नहीं। जब संसार की सबसे बड़ी दो घटनाएं जन्म और मृत्यु का कोई महूर्त नहीं है तो बाकी सब वहम् है। १९३० में रूस वालों ने अपने बच्चों को यह सिखाना श्शुरू किया कि न तो कोई आत्मा होती है, और न ही परमात्मा होता है। उन्हें पूरे २५ वर्ष लगे ये बात समझाने में तब जाकर उनकी पीढ़ी इस बात को समझ

पायी। इसी का परिणाम है कि रूस में आज ५५ हजार वैाानिक श्शेधकर्ता हैं और साथ में शिक्षित, विकसित और शक्तिधारक देश भी है। यही हाल संसार के अन्य अनेक विकसित देशों का है जब कि भारत के लोगों को कोई आत्मा, परमात्मा, धर्म के चमत्कारों, भूत—प्रेत के अस्तित्व के बारे में कोई कह रहा हो, तो श्शीघ्रता से उनके दिमाग में उतरने लग जाता है परन्तु इसके विपरीत कोई कुछ कहे तो लोग उसे उल्टा पागल करार कर देते हैं।

भारत में सबसे ज्यादा साहित्य ध्यान, समाधि, आत्मा और मोक्ष पर रचे गये हैं। सबसे ज्यादा गुरू, शिष्य, बाबा, योगी, सन्यासी, भक्त और भगवान पैदा किये गये अगर ये सारे लोग पाँच प्रतिशत भी सफल हुए होते तो भारत सबसे अमीर और दुनियाँ का सबसे शक्तिशाली, वैज्ञानिक, लोकतान्त्रिक और समतामूलक समाज का धनी होता क्योंकि ध्यान के जो फायदे गिनाए जाते हैं उनके अनुसार आदमी सृजनात्मक करूणावान तटस्थ और सदाचारी बन जाता है।

भारत की गरीबी, आपसी भेदभाव, छूआछूत, अन्धविश्वास, पाखण्ड, भाग्यवाद देखकर नहीं लगता कि भारतीय समाज और इसके निराशाजनक आध्यात्मिक साहित्य पर रचित इतिहास ने तीन हजार सालों में कुछ रचनात्मक करने दिया हो?

पिछले दो हजार सालों से हमारा देश भारत किसी न किसी अर्थ में किसी न किसी बाहरी कॉम का गुलाम रहा है। मुठ्ठी भर आक्रमणकारियों ने करोड़ों की जनसंख्या के इस देश को कैसे गुलाम बनाया ये किसी चमत्कार से कम नहीं है। इस चमत्कार को किसी आध्यात्मिक साहित्यकार ने नहीं लिखा कि ये "देश वीर जवानों का" फिर यह चमत्कार कैसे हुआ? ऐसे हजारों अध्याय इस देश में छुपे हुए हैं। मूर्खताओं के सबूत मिटते रहने के लिए इस मुल्क ने अपना वास्तविक इतिहास कभी नहीं लिखा बल्कि कल्पनाओं को गढ़कर, रचकर गौरवशाली इतिहास की संज्ञा देकर गर्व करते रहे। मुल्क क्यों लुटा इसकी जिम्मेदारी कभी नहीं लेते फिर भारत के परलोकवाद, अध्यात्म, आत्मा—परमात्मा और ध्यान ने इस देश को क्या दिया?

हाँ भारत में अलग किस्म के बहुत सारे आविष्कार अवश्य किये गये हैं— ऊपर वाला खुश कैसे होता है, ऊपर वाला क्यों नाराज क्यों होता है, स्वर्ग में कैसे जाएँ? नरक से कैसे बचें, स्वर्ग में क्या—क्या मिलेगा, नरक में क्या क्या सजा है? ग्रहों को कैसे टालें, मुरादें कैसे पूरी होती हैं, पाप कैसे धुलते हैं? पितरों की तृप्ति कैसे होगी? पुण्य कैसे मिलेगा? हर बिन्दु पर सहित्य पुराण रचे हुए उपलब्ध मिलेंगे।

ऊपर वाला किस्मत लिखता है, वह सब देखता है, वो हमारे पाप—पुण्य का हिसाब लिखता है, जीवन—मरण उसके हाथ में है, उसकी मर्जी के बिना पत्ता भी नहीं हिलता, ऊपर वाला खाने को देता है, वो तारीफ का भूखा है, वो खर्च खराबी से काम करता है, मन्त्रों द्वारा संकट निवारण हजारों किस्म के शगुन—अपशगुन, धागे—ताबीज भूत—प्रेत, पुनर्जन्म, टोने—टोटके, राहू—केतू, श्शनि ग्रह, ज्योतिष वास्तुशास्त्र, पंचक, मोक्ष, हस्तरेखा, मस्तक रेखा, वशीकरण, जन्मकुण्डली, काला जादू, तन्त्र—मन्त्र, झाड़—फूक बगैरा—बगैरा किस्म के इनके हजारों आविष्कार हैं।

अब आप विश्व के उन विकसित देशों को देखिए जिन्होंने कई सौ वर्ष पूर्व धर्म, की परमात्मा की और अध्यात्म की बकवास को नकारते हुए व्यवस्थित ढंग से विज्ञान और तर्क से विकास किया। विज्ञान, समाजशास्त्र, तकनीकी, मेडिसन, लोकतन्त्र आदि सब कुछ विश्व के उन नास्तिकों ने विकसित किया है जिन्हें हमारे देश के बाबा लागे दिन—रात गाली देते रहते हैं। बचपन से मन पर आस्तिक संस्कार— स्कूल हो घर हो हर तरफ दैवीय श्शक्ति को कच्चे मन पर बिठा दिये जाने के कारण हम विज्ञान को आशातीत तबज्जो नहीं दे पाये। ऐसे संस्कारों में हम पलते, बढ़ते रहे हैं और हमारे अंतर्मन में यह बैठ जाता है कि भगवान का आस्तित्व है, श्शैतान भी है उसे नकारने के लिए हमारा मन तैयार नहीं हो पाता। इसलिए लोगों के सामने कितना ही माथा पीटो तो भी वह यही कहेंगे कि कुछ तो है। अपनी कमाई के उद्देश्य से आज टी०बी० सीरियलों में अधिकांश अन्धविश्वाय काल्पनिक बातों के अलावा कुछ और नहीं दर्शाते।

हमें बपचन से तैयार ही किस तरह से किया जाता है यह जानना बेहद जरूरी है। बचपन में माँ कहती है उधर मत जाना वहाँ भूत आ जाएगा, भगवान के सामने हाथ जोड़ो और टी०बी०, मोबाइल फोन पर कार्टून में चमत्कार, जादू जैसी अवैज्ञानिक बातें दर्शाकर बच्चों का मनोरंजन बच्चों के अर्न्तमन में गहराई तक असर करता है जो बड़े होने के बाद भी इंसान के मन में चमत्कार और जादू के लिए आकर्षण बना रहता है।

जहाँ तक हमारे देश में नारी की सामाजिक स्थिति में सुधार की बात है वह किसी आचार्य या मसीहा के उपदेश की देन नहीं है बल्कि अर्थ व्यवस्था में परिवर्तन का परिणाम है। युगान्तर में आजीविका और अच्छे रहन—सहन की प्रत्याशा में लोग गाँवों से नगरों की ओर उम्मुख हुए। परिवार के मुखिया की स्वयं आप से ही घर चलाना कठिन लगने लगा गाँव में ग्रहणी अपने श्रम से घर की अर्थव्यवस्था में जो सहयोग देती थी वह शहर आते ही समाप्त हो गया, शारीरिक श्रम की अपेक्षा बौद्धिक श्रम आवश्यक लगने लगा। इस प्रकार स्त्री का शिक्षा की ओर रूझान बढ़ा अब तक ग्रहणी को आभास ही नहीं था कि वह परिवार की अर्थव्यवस्था में सहयोगी भी है, पर जब वह शिक्षित होने लगी तब रोजगार में लगीं, उसके हाथ में अपनी कमाई के रूपये आने लगे, उसे अपने हक का भी बोध हुआ और नारी की सामाजिक स्थिति में सुधार होने से पुरूष के आधिपत्य के वर्चस्व में कमी आने लगी।

जहाँ तक समाज में नारी के प्रति सोच की बात है वहाँ जब समाज और पुलिस की सोच सामन्ती हो, सम्पन्न और प्रभावशाली वर्ग सारे मूल्यों मर्यादाओं को ताक पर रखकर क्लबों और सड़कों पर कामुक और भड़काऊ प्रदर्शन करने में अपनी शान समझता हो, सत्ता का अभयदान हो, टी०वी०, फिल्में, सैक्स और स्केण्डलों से भरी हों, पूँजीवादी व्यवस्था नारी देह को मात्र अपना उत्पाद बेचने का साधन बना रही हो, तो नारी के प्रति समाज की सोच कैसे बदलेगी?

क्या प्राचीनकाल से नारी को मानवी समझा जाता रहा है? यदि हाँ, तो दान किसी वस्तु का दिया जाता है जैसे गौ—दान, भूदान, धार्मिक कर्मकाण्ड के किए दान (भिक्षा नहीं) आदि बच्चे का कभी दान नहीं दिया जाता बल्कि गोद दिया जाता है तब नारी के दान अर्थात कन्यादान का चलन कब और कैसे, किसने शुरू किया? क्या सोच कर, किस उद्देश्य से किस वर्ग ने विवाह के समय नारी का "कन्यादान"

नाम का प्रयोग किया? जाहिर सी बात है कन्यादान श्शब्द नया नहीं है न नारी के लिए यह मानवी है।

हर समाज स्त्री—पुरूष की समानता का उपदेश देता है पर व्यवहार में जिसका वर्चस्व होता है, उसी की चलती है और यह स्थिति सनातन धर्म में ही नहीं है अपितु इस्लाम में भी दिखाई देती है। इस्लाम युग के हिसाब से महिलाओं के अधिकारों और लैंगिक समानता के मामलों में एक क्रांतिकारी धर्म है पर जिस प्रकार हमारे धर्मशास्त्रों ने जीवन के हर क्षेत्र में पुरूष के वर्चस्व का महत्व देते हुए नारी की स्थिति का लगातार अवमूल्यन किया, उसी प्रकार मौलवियों ने कुरान में पैगम्बर मुहम्मद साहब द्वारा समाज, शिक्षा और सम्पत्ति में महिलाओं की पुरूष से बराबरी के उपदेश की लगातार अनदेखी की और स्त्रियों की सामाजिक स्थिति को अन्धविश्वास और पाखण्डवाद का चक्रव्यूह रचकर इतना गिरा दिया कि संसार में आज जितनी असहाय स्थिति मुस्लिम महिला की है, उतनी अन्य किसी भी सम्प्रदाय की महिला की नहीं है।

प्राचीन समय से ही जैसे—जैसे समाज आगे बढ़ा, घर और समाज में पुरूष का वर्चस्व बढ़ता गया, नारी तथा शूद्रों के प्रति समाज का रूख और भी कठोर होता गया, क्योंकि स्त्री घर के भीतर पुरूष के सुख और आराम का साधन थी तो शूद्र घर के बारह उसके आर्थिक संसंधनों को पोषित करने का स्रोत था पुरूष प्रधान समाज के नीतिकारों ने अपने हित के लिए दोनों को ही शिक्षा से वंचित भी किया और उन पर उनके निषेधात्मक विधान भी लागू किये। स्त्री शिक्षा गृह कार्य में दक्षता तक सीमित कर दी गई। शास्त्रों के अध्ययन, यहाँ तक कि श्शास्त्रों की भाषा सीखने तक पर प्रतिबन्ध लगा दिया।

सामन्तों और आक्रान्ताओं द्वारा युवा स्त्रियों के अपहरण की लगातार घटनाओं के कारण कन्याओं को घर से बाहर निकलना दूभर हो गया उन्हें सूर्य का प्रकाश भी नसीब होना मुस्किल हो गया जिसके परिणाम स्वरूपन बाल विवाह का प्रचलन हुआ और आठ वर्ष की गौरी, नौ वर्ष की रोहिणी आदि नाम विधान के द्वारा आठ वर्ष की अवस्था से पहले ही कन्या का विवाह कर देने की परम्परा आरम्भ हुई जो कहीं—कहीं आज भी विद्यमान हैं। यही नहीं पुंसवन संस्कार के अवसर पर ऐसी वधू के समागम के लिए सहमत न होने पर पहले मिष्ठान, वस्त्रादि का प्रलोभन देने और फिर भी सहमत न होने पर पति द्वारा उसे लाठी से पीटने, गाली देने का निर्देश दिया गया है अर्थात मारपीट कर वश में करने की परम्परा थी। आठ वर्ष की विवाहित कन्या अपना बचाव करने तक में सक्षम नहीं थी वह पूर्ण रूप से असहाय थीं उसके मायके वाले भी मददगार नहीं थे क्योंकि रिवाज के अनुसार विवाहित कन्या को एक बार पति के घर में प्रवेश करने के बाद उसकी अर्थी ही बाहर आनी चहिए। क्योंकि पिता से गाय, अन्न या किसी अन्य वस्तु की तरह पुत्री को दान में दे चुका होता है ऐसा कहा गया है ब्राहम्ण श्लोकों में। यही नहीं पति की मृत्यु होने पर, भले ही वह स्वयं अल्प आयु अथवा युवा ही क्यों न हों पति के साथ ही सती होने (सती कर दिये जाने) और जो स्त्री सती होने के लिए तैयार न हो तो उसे जबरन पति के शव के साथ चिता में झोंक कर सती कराया जाने लगा। सती का दैवीकरण इसी का प्रतिफल है।

उसी प्राचीन समय की बात करें जिस संस्कृति में नारी का सामाजिक स्तर काफी ऊँचा बताया गया है तो उस समय किसी सभ्रान्त अतिथि के आने पर नारी को माला और चन्दन की तरह तस्तरी में

पेश करने वाली वस्तु कहा गया है। रामचरित मानस में ऋषि भारद्वाज भरत के स्वागत के लिए जिन वस्तुओं की व्यवस्था करते है, उनमें एक वस्तु नारी भी है (स्त्रक चन्दन वनितादिक भोगा) तात्पर्य यह हुआ कि समाज की नजर में सामन्य स्त्री केवल भोग्य वस्तु थी फिर भी कहते हैं कि हमारी संस्कृति में नारी का सामाजिक स्तर काफी ऊँचा था, क्योंकि हमारे पूर्वजों ने यत्र नायिस्तु पूज्यते रमन्ते तन्त्र देवता (जहाँ नारी का सम्मान, पूजा होती है वहाँ देवता निवास करते हैं) का उपदेश दिया था। क्या यह नैतिक उपदेश इस बात का सूचक नहीं कि समाज में नारी की स्थिति अच्छी नहीं थी।

जहाँ तक हम प्रचीनकाल की भारतीय महिलाओं की स्थिति की बात करें तो वैदिक काल में महिलाओं का स्तर काफी ऊँचा बताया गया है उन्हें जीवन के हर क्षेत्र में पुरूषों की तरह बराबरी का अधिकार था। लड़कियों की कम उम्र में विवाह की परम्परा नहीं थी। स्वयंवर की स्वतन्त्रता थी। परन्तु इतिहास इस बात का साक्षी है उस काल में भी पुरूष प्रधान समाज होने का कारण महिलाओं की तुलना में पुरूषों को अधिक महत्व और प्रमुखता दी जाती रही है। चौथी सदी तक युवकों के लिए आम स्कूल नहीं थे। उच्च शिक्षा मात्र उच्च जाति के हिन्दुओं के लिए ही सीमित थी। आम महिलाओं को शिक्षा प्राप्त करने की अनुमति नहीं थी वह परिवार में ही पिता अथवा घर की किसी शिक्षित महिला से शिक्षा ग्रहण कर सकती थी। घर की चौखट से बाहर निकलने की उन्हें आजादी नहीं थी।

वैदिक युग के उपरान्त लड़कियों में शिक्षा हासिल करने का चलन ही समाप्त हो गया। महिलाओं को पुरूष की सम्पत्ति समझाा जाने लगा। उसमें सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन को ही कुचल कर रख दिया गया और धर्म को संस्थागत कर उच्च वर्ग के हाथों में पहुँचा दिया गया। उच्च वर्ग ने महिलाओं की आजादी पर पाबन्दी लगा दी और उससे ज्ञान प्राप्त करने की स्वतन्त्रता छीन ली गई। इसके बावजूद उस ब्राहम्णवादी व्यवस्था के विरूद्ध बौद्ध धर्म ने खूब तरक्की की और बौद्ध धर्म के बाद भारत में जैन धर्म भी खूब फला—फूला।

८ वीं और ९ वीं शताब्दी में लड़कियों की विवाह आयु घटाकर ९ से १० वर्ष तक कर दी गई जो नारी शिक्षा के लिए बहुत ही घातक सिद्ध हुई। इस युग में लड़कियों के माता—पिता को पढ़ाने के बजाय लड़कियों के विवाह पर अधिक जोर दिया जाने लगा। ९ वी शताब्दी के आते—आते नारी शिक्षा, मान—सम्मान उच्च परिवारों तक ही सीमित रह गई जो शहरों से सम्बन्धित थी न कि ग्रामीण अंचल से। ६०० से ३०० ई०पू० उत्तर वैदिक काल में स्त्रियों की स्थिति में कुछ खास नहीं हुआ। हालाँकि महाभारत में उल्लेख मिलता है कि स्त्रियों की स्थिति पुरूषों के समान थी परन्तु मनु परम्परा इसीकाल में प्रलित हुई जिसके अनुसार स्त्रियों को वैदिक पाठ की मनाही की गई, यज्ञ करने पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया, पति परमेश्वर होने का बीजारोपण हुआ, विधवा विवाह का पूर्ण निषेध हुआ और बाल विवाह का प्रचलन आरम्भ हुआ।

गौतकीय धर्म सूत्रों में उल्लेख मिलता है कि रजो दर्शन से पूर्व ही कन्या का विवाह कर देना चाहिए, लड़की पैदा होना अभिशाप माना जाने लगा वस्तुत: धीरे—धीरे स्त्रियों पर अनेक प्रतिबन्ध लगा दिये गये।

११ वीं शताब्दी तक स्मृतिकाल में महिलाओं की स्थिति में गिरावट स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगी। स्मृतिकारों एवं नीतिकारों ने इस प्रकार के नियम बनायं कि महिलाओं की स्थिति रानी से सेविका और शक्ति के स्थान पर दुर्वलताओं की खान सी हो गई। इस युग में पति देवता माना गया और पति की सेवा करना धर्म बताया गया। महिलाएं अपनी इच्छा से पति का चयन नहीं कर सकती थीं और पति उनके लिए साथी न रहकर उनसे ऊपर उच्च स्थिति वाला बन गया। स्मृतिकारों ने निर्देश दिया कि महिलाओं को किसी भी स्थिति में स्वतन्त्र नहीं रहने देना चाहिए। महिलाओं के लिए बाल्यकाल में पिता के संरक्षण में, युवावस्था में पति तथा वृद्धावस्था में अपने बेटे के संरक्षण में बिताना चाहिए। शिक्षा पर प्रतिबन्ध सा लग गया, बाल—विवाह पर जोर, विवाह में कन्या की सोच एवं इच्छा का अन्त, पुरूष का महिला पर पूर्ण नियन्त्रण, विधवा विवाह की कठोरता, सती प्रथा आदि मनुवादी व्यवस्था ने अन्धविश्वास और पाखण्डवाद का चक्रव्यहू रचकर जो हमारे देश में आज भी प्रचलित है महिलाओं को उनके अधिकारों से वंचित रखा, सामाजिक रूप से तरह—तरह से प्रताड़ित किया गया। एक विधवा महिला के साथ एक चुड़ैल जैसा व्यवहार किया गया, ढंग के कपड़े पहनने व साज—श्रंगार की इजाजत नहीं दी गई।

इतिहास बताता है कि जैन धर्म और बौद्ध धर्म ईश्वर में व वेदों में विश्वास नहीं रखता। अन्धविश्वास और पाखण्डवाद के चक्रव्यूह की सामाजिक नियमों की कठोरता के परिणमास्वरूप पूर्व वैदिक काल से चली आ रही रूढ़िवादी मान्यताओं पर समयानुकूल कुठारघात होना स्वाभाविक था इसलिए छठी शताब्दी ई०पू० इस धार्मिक क्रान्ति का प्रादुर्भाव हुआ और इसका नेतृत्व महावीर स्वामी और महात्मा बुद्ध ने किया जिससे चातुर्वण्य व्यवस्था के कारण ब्राहम्ण तथा क्षत्रिय प्रतिस्पर्धा में वैश्य भी सामिल हो गये यहाँ तक कि श्शूद्र वर्ण भी अपने कर्मगत महत्व को समझने लगा और अपनी दशा को उन्नत बनाने का प्रयास शुरू किया।

महिलाओं की जिस युग में सर्वाधिक सामाजिक स्तर की गिरावट हुई वह मध्य कालीन युग माना गया है। १३ वीं सदी के आरम्भ से १७ वीं श्शताब्दी के अन्त तक के समय को मध्य कालीन युग माना गया है। जैसा कि वर्णित है वैदिक युग में नारी की उच्च स्थिति थी उन्हें पूर्ण स्वतन्त्रता थी वहीं मध्य कालीन युग में नारी की प्रथागत तथा वैधानिक स्थिति में गिरावट आ गई। नारी शिक्षा का प्रायः लोप हो गया, नारी अन्धविश्वास और पाखण्डवाद के चक्रव्यूह की परम्पराओं में जकड़ती गई। इसी युग में पर्दा—प्रथा शुरू हो गई, सती प्रथा ने जोर पकड़ा, विधवा पुनर्विवाह प्रतिबन्धित होने लगे। बहुपत्नी विवाह आरम्भ हो गये क्योंकि बहुपत्नी विवाह को श्शान समझा जाने लगा।

मध्य कालीन युग में महिलाओं की स्थिति इस सीमा तक गिर गई कि उसे एक वस्तु की तरह पुरूष अपनी इच्छानुसार प्रयोग में ला सकता था। तलाक तथा विवाह—विच्छेद ने जोर पकड़ लिया था। इसी मध्य कालीन युग में मुख्य रूप से नारी की आर्थिक पराधीनता, कुलीन विवाह, वेमेल विवाह प्रथा, अन्तर्जातीय विवाह, बाल—विवाह, अशिक्षा और संयुक्त परिवार प्रणाली आदि महिलाओं की स्थिति में अत्यधिक गिरावट के कारण थे। यह काल सदा के लिए भारतीय समाज में काला धब्बा बन कर रह गया था। कुछ अर्थों में भारतीय इतिहास में नारी की बात यदि राज—परिवारों या उनके सम्बन्धित नारी की हो

तो उसे सामान्य महिलाओं से बेहतर कहा जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ :

१ गुप्ता मनमोहन एडवोकेट, इतिहास और सच : प्रकाशक किताब महल, इलाहाबाद

२ डॉ० सिंह राजेन्द्र, भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति — सन्मति पब्लिकेशन हापुड़

३ प्रो० कुमार विवेक, समाजशास्त्री जे०एन०यू०, दैनिक जागरण ५ सितम्बर २०२२